‘आईएसएएए’ के संस्थापक-संरक्षक,
नोबल पुरस्कार विजेता डॉ. नॉर्मन बोर्लोग को एक श्रृद्धांजलि

विश्व में हरितक्रांति
के जनक

•●•

विश्व शांति के नोबल
पुरस्कार विजेता

•●•

विकासशील विश्व के छोटे और
साधनहीन किसानों के हितैषी

•●•

‘वर्ल्ड फूड प्राइज’
के संस्थापक

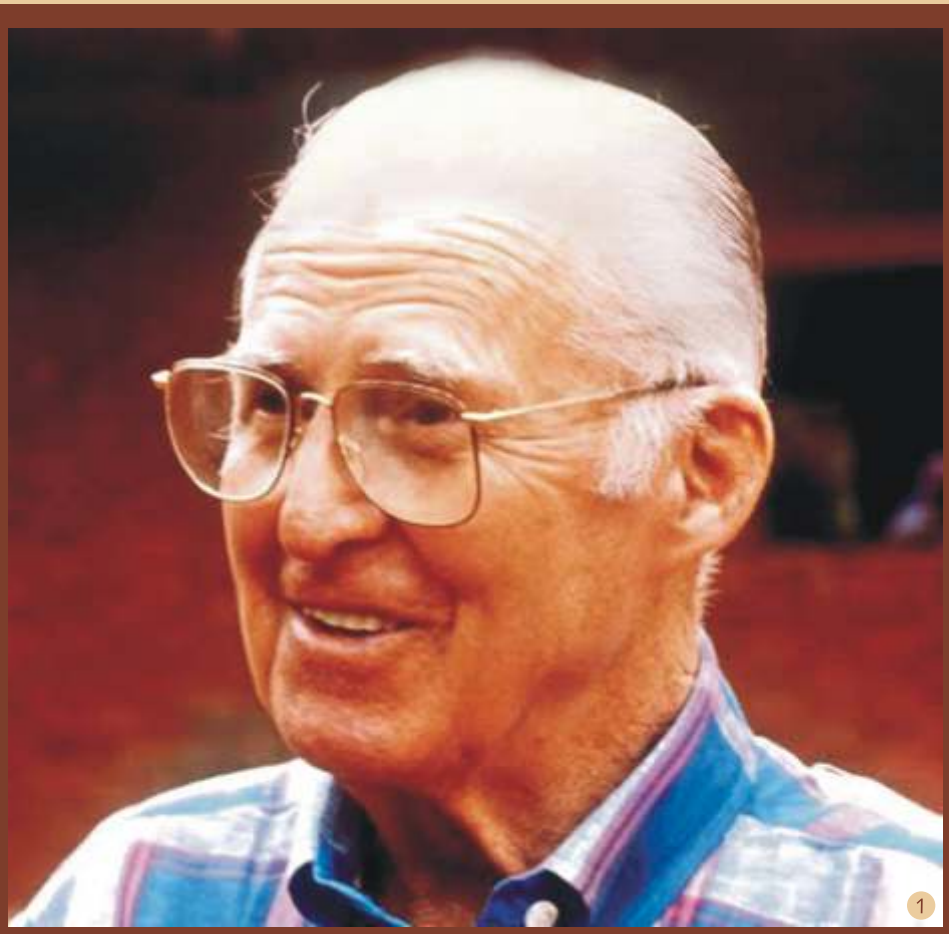

नॉर्मन बोर्लोग

1914 - 2009

ISAAA
International Service for the Acquisition of Agri-biotech Applications

2

3

4

डॉ. नॉर्मन बोर्लोग की विरासत

गरीबों के लिए कृषि विकास के मसीहा डॉ. नॉर्मन बोर्लोग विगत 12 सितम्बर 2009 को दिवंगत हो गए। वे 95 वर्ष के युवा थे क्योंकि कैंसर से लड़ते हुए भी उनके मन में कुछ कर गुजरने का उत्साह नौजवानों की तरह का था। 25 मार्च 1914 को अमेरिका के आयोवा राज्य के क्रेस्को नगर में उनका जन्म हुआ था। वे विश्व के कृषि–परिदृश्य पर अपनी गहरी छाप छोड़ गए, क्योंकि जीवन भर गरीबी और भूख से राहत दिलाने की एक जंग में जुटे रहे। डॉ. बोर्लोग ने गेहूं की अधिक उपज देने वाली, रोगरोधी अधबौनी किस्मों के विकास में अग्रणी योगदान किया। वे फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए जीनांतरित (जीएम) फसलों के प्रबल पक्षधर थे।

नोबेल शान्ति पुरस्कार

डॉ. नॉर्मन बोर्लोग को सन् 1970 में जब शांति का नोबेल पुरस्कार दिया गया था, तो उनके प्रशस्ति पत्र का समापन नोबेल प्राइज कमेटी ने इन शब्दों के साथ किया था, **''भूखी दुनिया को रोटी उपलब्ध कराने में अपनी आयु के किसी भी अन्य व्यक्ति से अधिक योगदान डॉ. नॉर्मन बोर्लोग का था। हमने उन्हें शांति का नोबेल पुरस्कार दिया क्योंकि हम मानते हैं कि दुनिया से भूख मिटेगी तभी शांति होगी। डॉ. बोर्लोग ने विश्व की खाद्य–स्थिति को बदल दिया और जनसंख्या–विस्फोट और हमारे खाद्य–उत्पादन के बीच चल रही निराशावादी दौड़ को आशा की राह दिखाई।''**

डॉ. नॉर्मन बोर्लोग बायोटैक फसलों के प्रबल प्रक्षधर थे क्योंकि वे मानते थे कि भविष्य की खाद्य सुरक्षा, भुखमरी और गरीबी से राहत इसी प्रौद्योगिकी से सुनिश्चित होगी

लगभग एक अरब लोगों को भूख से मुक्ति के लिए शांति का नोबेल पुरस्कार डॉ. बोर्लोग को देने से विश्व को यह संदेश भी मिला कि उन्होंने 'कुछ समय दे दिया है' ताकि फसलों के सुधार की प्रौद्योगिकी विकसित करने में कोई ढील न हो, जो कल की दुनिया का पेट भरने के लिए 'अपरिहार्य' है। डॉ. नॉर्मन बोर्लोग के घनिष्ट मित्र उन्हें 'नार्म' के घरेलू नाम से बुलाते थे। 'नार्म' बायोटैक फसलों के प्रबल पक्षधर थे क्योंकि वे मानते थे कि भविष्य की खाद्य–सुरक्षा इसी प्रौद्योगिकी से सुनिश्चित होगी।

उनका कहना था कि **''पिछले एक दशक से अधिक समय से हम पौधों की जैव–प्रौद्योगिकी की सफलता के साक्षी रहे हैं। पूरी दुनिया में यह प्रौद्योगिकी किसानों को अधिक उपज दिलाने में मदद करने के अलावा कीटनाशियों का इस्तेमाल और मिट्टी का कटाव करने में भी सहायक रही है। जिन देशों में विश्व की आधी से अधिक आबादी रहती है, वहां जैव–प्रौद्योगिकी के काम और उसके सुरक्षित होने की बात एक दशक से अधिक समय से प्रमाणित हो चुकी है। जिन देशों में किसानों के पास पुराने और कम कारगर तरीकों को अपनाने के सिवा कोई चारा नहीं है, वहां के नेताओं को अब साहस दिखाने की जरूरत है। जो काम पहले हरितक्रांति ने किया, उससे बड़ा काम अब पौधों की जैव–प्रौद्योगिकी कर रही है, यानी खाद्यान्न के उत्पादन की बढ़ती मांग को पूरी करने में मदद करने के साथ–साथ अगली पीढ़ियों के लिए पर्यावरण को भी सुरक्षित रखना।''**

विश्व खाद्य पुरस्कार

सन् 1986 में डॉ. नॉर्मन बोर्लोग ने विश्व खाद्य पुरस्कार की स्थापना की, जिसे पहले तीन वर्षों तक जनरल फुड कंपनी ने सहयोग दिया। वर्तमान में विश्व खाद्य पुरस्कार को अमेरिका के आयोवा राज्य के व्यवसायी जॉन

रूआन के सहयोग से प्रदान किया जाता है जिन्होंने इस पुरस्कार को अनन्त काल तक उदारतापूर्वक सहयोग करने का संकल्प किया है। विश्व खाद्य पुरस्कार कार्यक्रम प्रतिवर्ष अक्टूबर में बोर्लोग संगोष्ठी और विश्व खाद्य पुरस्कार युवा संस्थान कें संयोग से डी मॉईन, आयोवा में आयोजित किया जाता है, जिससे भविष्य के कृषि नेताओं का विकास हो सके। यह गौरव की बात है कि दुनिया भर में विश्व खाद्य पुरस्कार को ''खाद्य के नोबेल पुरस्कार'' के समान जाना जाता है। यह पुरस्कार विश्व के सभी देशों में से उन लोगों को प्रदान किया गया है जिन्होंने विश्व की खाद्य सुरक्षा और खाद्य पूर्ति में अनुपम योगदान किया है।

भारत में हरित क्रांति के जनक डॉ. एम एस स्वामीनाथन को विश्व का पहला विश्व खाद्य पुरस्कार सन् 1987 में प्रदान किया गया। डॉ. स्वामीनाथन आईएसएएए के संरक्षक हैं।

आईएसएएए द्वारा जैव़–प्रौद्योगिकी के विश्व ज्ञान केन्द्र की स्थापना

ज्ञान • प्रौद्योगिकी • गरीबी उपशमन

सन् 2000 में आईएसएएए के संस्थापक एवं अध्यक्ष डॉ. क्लाइव जेम्स और अंतर्राष्ट्रीय समन्वयकर्ता डॉ. रैंडी हॉटिया के साथ डॉ. बोर्लोग तथा फिलीपींस की सरकार के अधिकारी फिलीपींस नेशनल एकेडेमी ऑफ साइंस एंड टैक्नोलोजी (एनएएसटी) के वैज्ञानिकों से मिले थे और खाद्य–सुरक्षा की विकट चुनौतियों का सामना करने में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में अपने अनुभव और विचार उनसे बांटे थे। उस दिन डॉ. बोर्लोग को 'एनएएसटी' का मानद सदस्य बनाकर सम्मानित किया गया था। फिलीपींस की इस यात्रा के दौरान डॉ. नॉर्मन बोर्लोग ने आईएसएएए के ज्ञान को बांटने की नई पहल में मदद करने के लिए फसलों की जैव–प्रौद्योगिकी के विश्व ज्ञान केंद्र (ग्लोबल नॉलेज सेंटर–केसी) की स्थापना में सहयोग किया था।

आईएसएएए के इस ज्ञान–केंद्र के उत्पादों में से एक उत्पाद है, ई–मेल न्यूजलैटर 'क्रौप बायोटैक अपडेट'। यह अब 200 देशों में 650,000 ग्राहकों को हर हफ्ते वितरित किया जाता है। इसकी प्रसार–संख्या 5,000 प्रति मास की दर से बढ़ रही है।

डॉ. क्लाइव जेम्स द्वारा डॉ. नॉर्मन बोर्लोग को हार्दिक श्रद्धांजलि

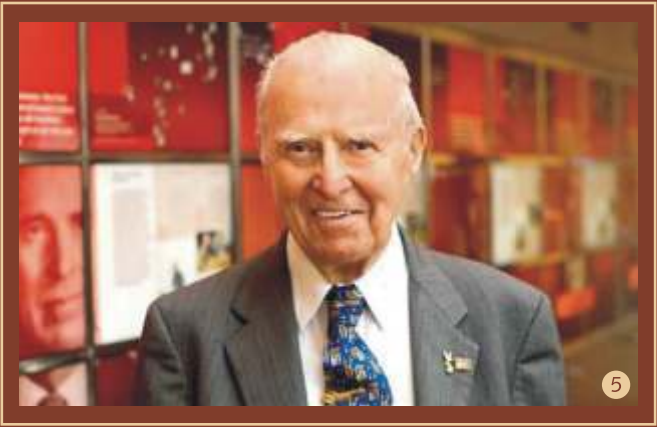

डॉ. नॉर्मन बोर्लोग को आईएसएएए परिवार के विशिष्ट सदस्य के रूप में हमेशा श्रृद्धापूर्वक याद किया जाएगा। उनका स्मरण इसलिए भी किया जाएगा कि उन्होंने पूरी दुनिया में लाखों–करोड़ों गरीबों के जीवन को सुधारने में अभूतपूर्व योगदान

डॉ. क्लाइव जेम्स

आईएसएएए के संस्थापक–अध्यक्ष तथा 'सिमिट' मैक्सिको के पूर्व उप महानिदेशक डॉ. क्लाइव जेम्स द्वारा रचे गए एक गीत को हिंदी रूपांतर में प्रस्तुत कर रहे हैं, जो उन्होंने अपने मार्गदर्शक तथा 30 वर्षों के घनिष्ट मित्र नॉर्म बोर्लोग की पुण्य स्मृति को समर्पित किया है। यह कविता मूलतः सन् 1484 में मैक्सिको में टैक्सकोको के राजकुमार ह्यूक्सोट्जिन ने अपने पितामह और नेजाहवल कोयोटी के सुप्रसिद्ध अजटेक सम्राट के निधन के समय उन्हें समर्पित की थी। अपने पौत्र ह्यूक्सोट्जिन की तरह वे भी वनस्पतिवेत्ता और कवि थे। डॉ. नॉर्मन बोर्लोग ने 50 वर्षों से अधिक समय सोनोरा की याक्वी घाटी में बिताया था और वे मैक्सिको से बहुत प्यार करते थे। इसलिए प्रिंस ऑफ टैक्सकोको के बाद उन्हें भी टैक्सकोको के राजकुमार की तरह याद किया जाए तो संभवतः वे भी इस सम्मान से बहुत गौरवान्वित होंगे।

याक्वी घाटी के लिए वे प्रायः कहा करते थे कि **''यही वह जगह है, जहां आकर उन्हें बेहद सुकून मिलता है और लगता है कि जैसे यही मेरा घर है।''**

"ब्रैड ऑफ हैवन" - भूख से मुक्ति

उन लाखों लोगों की तरह,
जिनकी मैंने भूख मिटाई।
तुमने कहा विदा लेने की,
मेरी भी अंतिम घड़ी आई॥
फिर भी कहीं कुछ तो मेरा नाम रहेगा।
फिर भी कहीं कुछ तो मेरा यश बचेगा॥
क्योंकि मैक्सिको में मैंने जिन गेहुंओं को किया था प्रजनित।
और उनके याक्वी वंशाणु करेंगे मानवता की कविता विकसित॥

"ब्रैड ऑफ हैवन" ब्रिटेन में राजकीय शोक के समय, गाया जाने वाला सुप्रसिद्ध गीत है
और राजकुमारी डायना के अंतिम संस्कार के समय गाया गया था।
जिस लक्ष्य के लिए बोर्लोग ने जीवन जिया वह इन पंक्तियों में निबद्ध है
– भूख से मुक्ति –

Photo Courtesy
1. International Maize and Wheat Improvement Center (CIMMYT), Mexico
2. Indian Council of Agricultural Research (ICAR), India
3. International Maize and Wheat Improvement Center (CIMMYT), Mexico
4. Indian Council of Agricultural Research (ICAR), India
5. Nobel Peace Center of the Nobel Foundation, Norway
6. International Service for the Acquisition of Agri-biotech Applications (ISAAA)

ISAAA
INTERNATIONAL SERVICE FOR THE ACQUISITION OF AGRI-BIOTECH APPLICATIONS